संपादक के नोट

प्रभु की स्तुति हो। मैं तुम सबका अभिवादन येशु नासरी के नाम से करती हूँ। मैं विश्वास करती हूँ कि तुम सब परमेश्वर के अनुग्रह से अच्छा कर रहे हो। अगर नहीं, तो हर रोज के जीवन से रुकावटों को तोड़ने के लिए, तुम्हे ज़रूरत है परमेश्वर के अनुग्रह को तुम्हारे भीतर अधिक से अधिक बढ़ने की।

अंत तक एक पवित्र जीवन जीने के लिए तुम्हे तुम्हारे भीतर परमेश्वर के बहुतायत अनुग्रह की ज़रूरत है। **२ कुरिन्थियों ९:८ – और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है, जिससे कि तुम सदैव, सब बातों में परिपूर्ण रहो, और हर भले कार्य के लिए तुम्हारे पास भरपूरी से हो।**

एक जवान लड़का आतमिक रीति से बढ़ने के लिए बहुत उत्सुक था और यह कि दूसरों के लिए ज्योति बने। उसने उसके जीवन में बहुत से परिक्षाओं और क्लेशों को पाया जो उसके आतमिक जीवन में रुकावट ला रहा था। वह परमेश्वर से लगातार प्रार्थना कर रहा था उसके जीवन के इस बाधा पर विजय पाने के लिए। एक दिन प्रभु ने उसे एक दर्शन दिखाया। यह लड़का एक नाव में था और आगे बढ़ना चाहता था लेकिन उसका नाव एक चट्टान से टक्राता रहा। इसलिए वह परमेश्वर से लगातार प्रार्थना करने लगा कि इस बाधा को निकाल दे। अचानक पानी बढ़ने लगा और उसका नाव चट्टान के ऊपर से गया। वह तुरंत समझ गया कि पानी का बढ़ना परमेश्वर का अनुग्रह है। बहुत बार हम प्रार्थना करते हैं कि चट्टान को निकाल, वह है, हमारे जीवनों की समसयाएँ। लेकिन परमेश्वर उसके अनुग्रह को हमारे जीवनों में बढ़ा रहा है और कह रहा है ‘मेरी अनुग्रह तुम्हारे लिए काफ़ी है’, और हमारी मदद करता है समसयाओं पर विजय पाने के लिए।

जब परमेश्वर का अनुग्रह तुम्हारे जीवनों में आता है, तुम तुम्हारी समस्याओं की चिंता नहीं करोगे। तुम समस्याओं से परे तुम्हारे लिए रखें आशीषों को प्राप्त करोगे। इसलिए, हमेशा परमेश्वर के अनुग्रह में उन्नति करो। याद रखों, जब तुम परमेश्वर की स्तुति करते रहते हो, तब उसका अनुग्रह अपने जीवन में प्रचुर मात्रा में होता है। जब तुम परमेश्वर के सामने अपने आप को विनम्र करते हो, तुम उसका अनुग्रह प्राप्त करोगे।

जब तुम परमेश्वर के बच्चों के साथ सहभागिता होते हो, उसका अनुग्रह तुम्हारे जीवन में बढ़ता रहेगा। तुम्हारा भीतरी मनुष्य उसकी आतमिक आशीष के साथ अतिप्रवाहित होगा, ताकि तुम दूसरों के लिए एक गवाही बन सकते हो। **२ कुरिन्थियों १:१२ – क्योंकि हमारा गर्व अर्थात् हमारे विवेक की साक्षी यह है कि हमने इस संसार में, तथा विशेषकर तुम्हारे प्रति, शारीरिक ज्ञान के अनुसार नहीं परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से पवित्रता और भक्तिपूर्ण सच्चाई से आचरण किया।**
प्रेरितों ने परमेश्वर के बारे गवाही दी। उन्होंने परमेश्वर के वचन को सुनाया और कहा कि येशु जीवित है और उन्होंने उनके निवास स्थानों को हिलाकर रख दिया। वे सब ने परमेश्वर के अनुग्रह को प्रचुर मात्रा में प्राप्त किया।

परमेश्वर की प्रचुर मात्रा के अनुग्रह के बार ज़रा सोचो। अब्राहम नूह और यूसुफ ने परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त किया। लेकिन पुराने नियम में इन पवित्र व्यक्तियों ने परमेश्वर के अनुग्रह प्रचुर मात्रा में प्राप्त नहीं किया था। जब हम नए करार में आते हैं, प्रेरितों ने येशु के रक्त और पवित्र आत्मा के द्व ारा परमेश्वर के अनुग्रह प्रचुर मात्रा में प्राप्त किया।

हम परमेश्वर के बच्चें जो नए करार में रहते हैं, भी इस प्रचुर मात्रा के अनुग्रह को प्राप्त कर सकते हैं। हम पैसे का भुगतान करके इस प्रचुर मात्रा के अनुग्रह को खरीद नहीं सकते। हमें परमेश्वर के इस मुफ़्त अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए, उसने एक उच्च कीमत चुकाई है। उसने हमारे लिए अपने आप को बलिदान कर दिया। उसने उसके रक्त की आखिरी बूंद भी हमारे लिए बहा दिया है।

तो तुम उसके अनुग्रह को प्राप्त भी कर सकते हो या इसे खो भी सकते हो। **योना २:८ – जो व्यर्थ मूर्तियों पर मन लगाते हैं, वे अपने करूणानिधान को त्याग देते हैं।**
इसलिए, विनम्र हो जाओ और उसके प्रचुर मात्रा के अनुग्रह को प्राप्त करो। **इब्रानियों १२:२८ – अतः जब हमे ऐसा राज्य मिलने पर है जो अटल है तो आओ, हम कृतज्ञ होकर आदर और भय सहित परमेश्वर की ऐसी उपासना करें जो उसे ग्रहणयोग्य हो।** हमारा अच्छा प्रभु तुम सब को सम्हालें और तुम्हें अपने प्रचुर मात्रा के अनुग्रह द्वारा आशीष दे, जब तक हम फिर मिलेंगे।

पास्टर सरोजा म.

शक्ति और ताकत की आत्मा।

भजन संहिता ९१:१४ – "उसने मुझ से प्रेम किया है, इसलिए मैं उसे छुड़ाऊंगा; मैं उसे ऊंचे स्थान पर सुरक्षित रखूंगा, क्योंकि उसने मेरा नाम जान लिया है। जो हमारे परमेश्वर में विश्वास करते हैं और उसके नाम में भरोसा करते हैं, उसने आठ विशेष आशीषों को भजन संहिता ९१ में रखा है। लेकिन कई इन आशीषों को नहीं समझते और पहचानते हैं। इस प्रकार से बड़े दुःख के साथ हमारा प्रभु परमेश्वर कहता हैं **होशे ४:६** में – **अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा नाश हो जाती है। इसलिए कि तू ने ज्ञान को अस्विकार किया है, मैं भी तुझे अपना याजक होने से अस्विकार कर दूंगा। इसलिए कि तू अपने परमेश्वर की व्यवस्था को भूल गया है, मैं भी तेरी सन्तान को भूल जाऊंगा।** हलांकि परमेश्वर ने हमारे लिए उसका आशीष रखा है, लोगों को इन आशीषों का पहचान नहीं है, वे पहचानते नहीं हैं कि येशु का जन्म क्यों हुआ, इस दुनिया में सेवा की और अंत में हमारे लिए क्रूस पर अपने बहुमूल्य जीवन को दिया। हाँ, परमेश्वर ने हमें पवित्र किया है और हमें राजाओं और याजकों के समान इस दुनिया में बनाया है, फिर भी हम भूल गए हैं क्यों हमारे प्रभु ने हमारे पापों के लिए कीमत चुकाई उसके जीवन के माध्यम से। इसलिए येशु कहता है "मैं भी तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को भूल जाऊँगा।" हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ने उसका इकलौता बेटा येशु मसीह को इस दुनिया में भेजा, हमारे लिए, हमें इस दुनिया के पापों से मुक्त करने के लिए, हमें जीवन देने के लिए परिपूर्ण और अनन्त। येशु ने प्रचार किया और सिखाया इस दुनिया में ३ १/२ साल के लिए। उसका उपदेश था केवल लोगों को पापी दुनिया से बचाने के लिए और उद्धार के साथ हमें अनुग्रह करने के लिए। लेकिन फिर भी लोगों ने उसकी शिक्षाओं पर ध्यान नहीं दिया। इसलिए, बड़े दुख और दर्द के साथ, प्रभु ने कहा "जो लोग परमेश्वर का कानून भूल गए हैं, मैं उनके बच्चों को भूल जाऊँगा"। **प्रकाशितवाक्य १:६ – और हमें एक राज्य तथा अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक बनाया, उसकी महिमा तथा सामर्थ्य युगानुयुग हो। आमीन।** जब हम परमेश्वर के प्यार और क्रूस पर उसके कष्टों को भूल जाते हैं, तो येशु मसीह हमारे लिए बहुत दुखी होता है। कल्पना करो हम पापी होकर हमें चोट लगता है जब हमारे बच्चे हमारा अवज्ञा करते हैं और हमें दुःख और दर्द देते हैं। कितना अधिक हमारा स्वर्गीय पिता हमारे अवज्ञा से दुखी होगा? हमारे प्रभु परमेश्वर उसके दिल में धर्मी और पवित्र है हमारे लिए उसके प्यार के कारण। कितना उसे हमारे

अवज्ञा के कारण दुख हुआ होगा, कि वह कहता है, ‘मैं नाश कर दूँगा, मैं अस्वीकार कर दूँगा और मैं अपनी दृष्टि से बाहर डाल दूँगा। हाँ, हमने वास्तव में हमारे परमेश्वर को चोट दिया हैं और उसे दुखी कर दिया हैं। हम फिर से पढ़े **होशे ४:६ – अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा नाश हो जाती है। इसलिए कि तू ने ज्ञान को अस्विकार किया है, मैं भी तुझे अपना याजक होने से अस्विकार कर दूंगा। इसलिए कि तू अपने परमेश्वर की व्यवस्था को भूल गया है, मैं भी तेरी सन्तान को भूल जाऊंगा।** हमें पता होना चाहिए कि परमेश्वर हमारी भलाई के लिए सब कुछ करता है लेकिन हम इसे नहीं समझने के लिए मूर्ख हैं। इस प्रकार, हम लड़ने के कारण हमारे घरों में अशांति लाते हैं। हम अपने ऊपर दर्द और दुख को लाते हैं। हम में उसके प्यार को समझने के लिए कोई ज्ञान नहीं है या हमारे परमेश्वर के बारे में सच्चाई का पता करने के लिए। **यूहन्ना ८:३२ – और तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुमको स्वतंत्र करेगा।** इस प्रकार हमारे जीवन में अंधकार से हमें मुक्ति नहीं मिलती सत्य के ज्ञान की कमी के कारण। हमारे जीवन में कुछ भी खुशी नहीं ला सकता है, अगर हमें सच्चाई का पता नहीं हैं। केवल सच ही हमें कृतज्ञता, पश्चाताप, क्षमा आदि का एक दिल देता है। हमारे दिल में क्रोध और घमण्ड़ कभी नहीं होगा जब हमें सच्चाई का पता होगा, क्योंकि ‘केवल सत्य हमें स्वतंत्र कर सकता है’। यह तो दुष्ट है जो हमें बंधन में रखता है। लेकिन जब समय होगा तब प्रभु परमेश्वर हमें लेगा और एक अन्य जगह पर अपने दाख की बारी में संयंत्र करेगा। उसकी इच्छा और योजना के अनुसार आगे बढ़ने और बने रहने के लिए। याद रखें, एक बार वह बुराई बंधन से हमें बचाता है, एक बार वह अपने दाख की बारी में हमें फिर से रोपित करेगा और हमें बने रहने के लिए मदद करेगा। हमारा परमेश्वर हम पर कभी नहीं चिल्लाएगा लेकिन उसके वचन से हमारे जीवन में चमत्कार के काम करेगा। लेकिन जब वह हमें सही नहीं करता, तो हम दुष्ट के परिवार के बनते हैं। इस प्रकार, अगर हमें ज्ञान की कमी है, तो हमें प्रभु से पूछना हैं और वह अपने दिव्य ज्ञान के साथ हमें आशीष देगा; और यह ज्ञान हमारे जीवन में और हमारे परिवार में खुशी और शांति लाएगा।

‘वचन’, ‘कलिसिया’ और ‘याजक’ का अर्थ क्या है? जब हमें इन तीन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आता हैं और उन्हें सम्मान नहीं करते हैं, तो हमारा जीवन व्यर्थ है! हमें पहले इन तीन शब्दों का सम्मान करने के लिए सीखना चाहिए वरना हमारा जीवन हमारे लिए एक नरक का आग बन जाएगा। प्रभु का रास्ता बहुत सकरा है; हमें हमारे जीवन में उसके लिए रास्ता बनाने के लिए खुद को झुकना और विनम्र करना है। अगर हम ऐसा करने में विफल

रहते हैं, हम परमेश्वर के राज्य के लिए योग्य नहीं हैं। हम सभी को झुकने और विनम्र होने के लिए सीखना है। मेरा जीवन एक गवाही है। मैंने एक पास्टर बनने के लिए १० साल इंतजार किया। अगर मैं अपने खुद के बुद्धि और ज्ञान के साथ जल्दबाज़ी करती, तो मैं आज इतना आशिषित नहीं होती। लेकिन क्योंकि मैंने एक बहन के रूप में उसके पैरों में धैर्यपूर्वक इंतजार किया १० साल के लिए, आज तक मैं मेरे जीवन में उसकी दया उठा रही हूँ। कोई भी समय से पहले कुछ भी नहीं कर सकता हैं और हम सभी को हमारे चुने हुए समय के लिए इंतज़ार करना चाहिए। याद रखो, मैं केवल सत्य पर खड़ी होऊँगी और सिर्फ सत्य का समर्थन करूँगी, क्योंकि मेरा प्रभु हमेशा मेरे जीवन में प्रथम और अंतिम है। परमेश्वर के राज्य में हमें उसके लिए एक भेड़ होना चाहिए, बकरी नहीं। एक भेड़ चरवाहे के साथ उसके पीछे अपने सिर को विनम्रतापूर्वक नीचे झुकाए चलता है। मैं हमेशा सच प्रचार करूँगी और कलिसियाँ को खुश करने के लिए प्रचार कभी नहीं करूँगी। सच्चाई अनन्त है और हमेशा सब से ऊपर प्रबल होगा। जैसा प्रभु दुख से कहता है, ‘मेरे लोगों को कोई भी सच्चाई को समझने के लिए बुद्धि नहीं है और इस प्रकार मुझे नकार दिया है; मैं उन्हें दण्ड दूँगा और उनके बच्चों को भूल जाऊँगा।’ कौन उसके कार्यों के लिए प्रभु से सवाल कर सकता हैं? हमारा प्रभु केवल हमें चुनता नहीं परन्तु हमें उसकी दाख की बारी में रखता हैं, लेकिन वचन कहता है कि वह हमारे चारों ओर एक बाड़ ड़ालता है और सब बुराईयों से बचाता हैं। वह हमपर पानी ड़ालता है और धैर्यपूर्वक इंतजार करता है यह देखने के लिए कि हम उसके लिए किस प्रकार का फल उत्पन्न करते हैं। क्या हम प्रभु के लिए अच्छा फल उत्पन्न करते हैं? क्या हम कह सकते हैं कि हम फल उत्पन्न करने वाले पौधें हैं उसके लिए? नहीं, क्योंकि हमारी बुद्धि की कमी के कारण, हम प्रभु के बच्चें उसके द्वारा नष्ट और अस्विकार कर दिए जाते हैं। हमारे अच्छे प्रभु के पास हम हर एक के लिए बड़ी योजना है और हमें बुद्धि होना आवश्यक है उसे पहचान ने के लिए।

जब दाऊद एक चरवाहा लड़का था उसने **भजन संहिता २३:१** में कहा – **यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।** दाऊद का परमेश्वर के साथ एक अद्‌भुत रिश्ता था। वह परमेश्वर से बहुत ज़्यादा प्यार करता था और वे दोस्तों के रूप में एक दूसरे के साथ चला करते थे, इसलिए वह कह सका, ‘यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।’ जब हम परमेश्वर से प्यार करते हैं और उसे स्वीकार करते हैं, हम साहसपूर्वक कह सकते हैं, ‘यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।’ यह महत्वपूर्ण है हमारे लिए कि हम वचन के गहरे अर्थ को जाने। यह वही दाऊद है जो गोलियत से लड़ा, **१**

शमूएल १७:४५ में कहता है – **तब दाऊद ने पलिश्ती से कहा, 'तू तो मेरे पास तलवार, भाला और बर्छी लेकर आया है, परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा, इस्राएल की सेना के परमेश्वर के नाम से तेरे पास आया हूँ जिसको तू ने ललकारा है।** यहाँ पर दाऊद उसे 'सेनाओं का यहोवा, सेनाओं का परमेश्वर' बुलाया है। कौन हमें हरा सकता है, जब हम अपने दिलों में विश्वास करते हैं जैसे दाऊद ने विश्वास किया? दुष्ट का कोई काम हमें नहीं रोक सकता किसी भी गंभीर युद्ध लड़ने से। क्या हम भी हमारे परमेश्वर को मान्यता दी है ' सेनाओं का यहोवा' और ' सेनाओं का परमेश्वर' के रूप में? अगर हमने उसे मान्यता दी है जैसे दाऊद ने उसे मान्यता दी है, तो परमेश्वर के बच्चों के बीच कोई कड़वाहट कभी नहीं होगा। दाऊद जानता था कि अपने चरवाहा का उपयोग उचित रूप से एक दिए गए स्थिति में केसे किया जाए। इस प्रकार, उसने गोलियत को आसानी से हराया और उसे एक महा युद्ध लड़ने की आवश्यकता नहीं थी। उसी प्रकार, यह महत्वपूर्ण है हमारे लिए भी परमेश्वर की नाम का उपयोग उचित रूप से हमारे जीवन में करने के लिए, उसके बाद ही हम हमारी लड़ाई जीत सकते हैं और शांति और आनन्द प्राप्त कर सकते हैं हमारे जीवन में। परमेश्वर ने प्यार से अब्राहम को बुलाया जैसे हम **उत्पत्ति १४:१९** में पढ़ते हैं – **तब उसने उसे यह आशीर्वाद दिया : 'स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता परमप्रधान परमेश्वर की ओर से अब्राम धन्य हो।'** हम देखते भी हैं कि पहले कि इस्राएल का याजक, मलिकिसिदक, दान लाया था अब्राहम के लिए और उसे धन्य कहा **उत्पत्ति १४:१८–२० – तब शालेम का राजा मलिकिसिदक, रोटी और दाखमधु ले आया। वह परमप्रधान परमेश्वर का याजक था। तब उसने उसे यह आशीर्वाद दिय : 'स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता परमप्रधान परमेश्वर की ओर से अब्राम धन्य हो परमप्रधान परमेश्वर भी धन्य है, जिसने तेरे शत्रुओं को तेरे वश में कर दिया।' फिर अब्राम ने उसे सब वस्तुओं का दसवां अंश दिया।**

सबसे उच्च परमेश्वर का अब्राहम, स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामीः इससे पहले कि अब्राहम परमेश्वर का अनुयायी बना, वह एक मूर्तिपूजक था। लेकिन एक बार, प्रभु ने अब्राहम के दिल को छुआ, परमेश्वर ने उसे बहुतायत से आशीष दिया और वह पूरी तरह से बदल गया। हमने अब्राहम पर दिया गया परमेश्वर कि आशीषों को देखा है। हम भी मूर्तिपूजक थे, हम अंधकार के लोग थे, पर जब सबसे उच्च परमेश्वर और स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी ने हमारे जीवन को छुआ और हमें उनके आशीषों का अनुग्रह प्राप्त हुआ। **प्रेरितों के काम ७:२ – तब उसने कहा, 'भाइयो और बुजुर्गों, सुनो! हमारा पिता अब्राहाम हारान में रहने से पहिले जब मेसोपोटामिया में था तो महिमामय परमेश्वर ने उसे दर्शन**

दिया। यहां परमेश्वर का नाम महिमा का परमेश्वर है। याद रखें, एक बार परमेश्वर ने अब्राहाम को छुआ, उसने मूर्ति पूजा छोड़ दिया और पूरी तरह से प्रभु परमेश्वर को स्वीकार कर दिया। लेकिन, अगर हम अपने पापों और मूर्ति पूजा में जारी रहें, हम इस तरह के एक आशीष को प्राप्त नहीं कर सकते। कब हम इस तरह कि बुद्धि प्राप्त करेंगे कि ऐसे सभी सांसारिक झूठी वाहवाही से हमारे जीवन को दूर रखे और विशुद्ध रूप से परमेश्वर कि ओर फ़िरे, ताकि हम सबसे उच्च परमेश्वर के बच्चे के रूप में संबोधित किए जाए? जैसे परमेश्वर ने अब्राहम को अपना परिवार, अपना देश और सबकुछ पीछे छोड़कर और उसके पीछे हो लेने को कहा, और अब्राहम ने तुरन्त बात मानी और प्रभु के पीछे हो लिया। प्रभु ने यहेजकेल, एस्तेर, यशायाह ओर पवित्र शास्त्र में अन्य बहुतों को उसके पीछे हो लेने को कहा और उन्होंने अपने सारे सांसारिक वस्तुओं को पीछे छोड़कर तुरंत उसके पीछे हो लिए। वें सब आशिषित हुएँ और आतमिक रूप से समृद्ध पाएँ। लेकिन अगर आज, हमारा प्रभु परमेश्वर हमसे भी ऐसा ही करने के लिए कहता है, क्या हम हमारे परिवार को त्यागकर और सब कुछ पीछे छोड़कर उसके पीछे हो लेने के लिए तैयार हैं? जब परमेश्वर ने यशायाह को नंगा चलने के लिए कहा, हलांकि यशायाह एक महान नबी था, उसने प्रभु की बात तुरन्त मानी। जब हम प्रभु की आज्ञा का पालन करते हैं, तो वह हमारे कारण दुनिया कि आँखें बन्द कर देता है। यह विश्वास हम में होना आवश्यक है। अगर हम अपनी बुद्धि से सोचते हैं, तो हम ऐसा कदम उठाने में सक्षम कभी नहीं होंगे, लेकिन जब हम परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार सोचते हैं, हम सुनिश्चित होंगे, कि परमेश्वर हमारे लिए दुनिया की आँखें बंद कर देगा। हाँ, जब परमेश्वर सदोम और अमोरा को नष्ट करना चाहता था, उसने पुरुषों को अंधा कर दिया और उन्हें रास्ता नहीं मिल सका; वें पागलों के जैसे रास्ता कि खोज की, लेकिन यह नहीं मिला। हाँ हमारे ज्ञान के साथ हम कुछ नहीं कर सकते। लेकिन जब, परमेश्वर हमें बुद्धि देता है, हमें आत्मा में और सही रास्ते पर निर्देशित किया जाएगा। इस प्रकार जब, येशु ने इस दुनिया में प्रचार किया, कई समर्थकों ने आधे रास्ते में छोड़ दिया, क्योंकि उन्होंने शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू करने के लिए बहुत कठिन पाया। क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।

हमारा प्रभु उसके साथ एक बड़ी भीड़ नहीं ले जाएगा, लेकिन कुछ चुनिंदा, उत्तम और उसके द्वारा चुने हुए। हमारा प्रभु सब कुछ अच्छे के लिए करता है; उसने हमें हमेशा महान खतरों और जीवन में आगे आनेवाले विनाश से बचाया है। प्रभु हम सभी के दिलों को और उसके प्रति हमारे प्यार को

जानता है और यदि हम सच्चे और सब कुछ जो हम करते हैं उसमें धर्मी हैं या नहीं।
एक दिन हम में से हर एक को खड़े रहना होगा येशु के सम्मुख 'न्याय के दिन' पर।
जैसे पवित्र शास्त्र कहता है, हम में से दो वहाँ होंगे लेकिन एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। कोई पक्षपात या घूस देना नहीं है परमेश्वर के राज्य में।
हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं, कई नाम हैं जो दर्ज नहीं किए गए। क्यूँ? हम गरीब आदमी को लाजर जानते हैं, जो अमीर आदमी के दरवाजे पर भीख माँग रहा था। उसका नाम दर्ज किया हुआ है, लेकिन अमीर आदमी का नहीं किया हुआ है। नबी बिलाम लिखता है **गिनती २४:१६ – यह उस व्यक्ति की वाणी है जो परमेश्वर के वचनों को सुनता है और परमप्रधान के ज्ञान को जानता है और दण्डवत् करते हुए भी खुली आंखों से सर्वशक्तिमान के दर्शन पाता है।** याद रखें, परमेश्वर के हाथ में जीवन की पुस्तक है और हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे नाम परमेश्वर के जीवन की किताब में लिखा होना है। इस प्रकार, जीवन के उस पुस्तक में हमारा नाम पाने के लिए, हमें नम्र होना चाहिए और हम नम्र होकर और घमण्ड़ के बिना रहते हैं, हमारी आँखें परमेश्वर की महान प्रकाशन द्वारा खुल जाएगी। नबी बिलाम परमेश्वर उसकी आँखें खोलने के बाद इस्राएलियों के लिए एक भविष्यवाणी देता है; इससे पहले वह कुछ भी नहीं कर सका। अगर बिलाम जैसे एक महान नबी की आँखें खोलने की ज़रूरत थी तो इससे भी बढ़कर परमेश्वर हमारे आतमिक आँखें खोलने की कितनी ज़रूरत है कि हम सच्चाई जान सके? हमें हमेशा श्येशु के जन्म और मृत्यु को याद रखना चाहिए ताकि हमारी आशिषें बहेंगी। **भजन संहिता ९१:९–१० – क्योंकि तू ने यहोवा को जो मेरा शरणस्थान है, अर्थात् परमप्रधान को अपना निवासस्थान बनाया है। इसलिए न कोई विपत्ति तुझ पर आएगी, न कोई दुख तेरे डेरे के निकट आने पाएगा।** जब हम मानते हैं कि परमेश्वर हमारा चरवाहा है, वह सेनाओं का यहोवा है, परमप्रधान परमेश्वर, महिमा का परमेश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता, केवल तब उसकी प्रतिज्ञा, जैसे दिया गया है भजन संहिता ९१ में, पूरी होगी। हमारा प्रभु हमें उसे चुनने के लिए एक विकल्प देता है; अगर हम चाहते हैं कि दुष्ट हमें स्पर्श या किसी भी तरह से चोट नहीं दे। जब हम सेनाओं के यहोवा को स्वीकार करते हैं, तब हमारा जीवन आशिषित हो जाएगा। हम पढ़ें **भजन संहिता ९२:१ – यहोवा का धन्यवाद करना भला है, और यह भी, कि हे परमप्रधान, तेरे नाम की स्तुति के गीत गाए जाएं। भजन संहिता ९१:१**

– जो परमप्रधान की शरण में वास करता है, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकना पाएगा। हमें प्रभु को धन्यवाद देना है और उसके नाम की स्तुति करनी चाहिए। हमारा परमेश्वर ना ऊंघता, ना सोता है। इस प्रकार हम विश्वास से कह सकते हैं ‘यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी। ऐसे विचार हमारे भीतर निर्मित किया जाना चाहिए। हमारा परमेश्वर सब कुछ जानता है, उस से कुछ भी छिपा नहीं है। वह कहावत याद करो, ‘जैसे हम बोते हैं, वैसे हम काटते हैं’, इसलिए परमेश्वर दुख से कहता हैं, मेरे लोगों को कोई ज्ञान नहीं है, क्योंकि उन्होंने मेरे व्यवस्था को त्याग दिया हैं और इसलिए मैं उन्हें अस्वीकार कर दूँगा और उनके बच्चों को भूल जाऊँगा। जब परमेश्वर सदोम और अमोरा को नष्ट करने के लिए अपने स्वर्गदूतों को भेजा, तब अब्राहम ने परमेश्वर से दो सवाल पूछाः १) अधर्मि लोगों के साथ क्या तुम धर्मी लोगों को भी नाश कर दोगे? परमेश्वर **उत्पत्ति १८:२६** में उत्तर देता है – **तब यहोवा ने कहा, ‘यदि मुझे सदोम नगर में पचास धर्मी ही मिल जाएं तो मैं उनके कारण सारे स्थान को छोड़ दूंगा।’** क्या सदोम के शहर में पचास धर्मी थे? नहीं। इसलिए, हमें भी हमारे जीवन में बहुत सावधान रहना चाहिए। परमेश्वर धर्मी लोगों को बचाएगा बल्कि देश को एक समग्र रूप से नहीं। लूत और उसका परिवार धर्मी गिना गया, पूरे सदोम और अमोरा के बीच। परमेश्वर कभी नष्ट नहीं करेगा एक भी धर्मी व्यक्ति को जिसका पवित्र शास्त्र में उल्लेख किया है। क्या कोई मुझे लूत की पत्नी का नाम बता सकता है? वह एक धर्मी मनुष्य की पत्नी थी, लेकिन परमेश्वर हमें सावधान करता है कि हम लूत की पत्नी की तरह नहीं बनें जो नमक के एक स्तंभ में बदल गई जब उसने बात नहीं मानी और उसके सांसारिक संपत्ति को देखने के लिए पीछे मुढ़ी। **भजन संहिता २३:३ – वह मेरे जी में जी ले आता है, धार्मिकता के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।**

हमें सच्चाई में क्यों चलना चाहिए? सच्चाई हमें आश्वासन देगी और हमें धर्मी रास्ते में चलने में मदद करेगी। **भजन संहिता ११९:१४२ – तेरी धार्मिकता तो सदा की धार्मिकता है, और तेरी व्यवस्था सत्य है।** परमेश्वर की धार्मिकता एक चिरस्थायी धार्मिकता है, वह बदलते सरकार और अधिकारियों के साथ बदलता नहीं है। वह वहीं ना बदलने वाला येशु है। वह आदि और अंत है। इस दुनिया में चीजें बदलती हैं। ‘स्टार ऑफ बेतलहेम कलिसियाँ अब रोस ऑफ़ शारोन कलिसियाँ बन गई है। लेकिन परमेश्वर कि धार्मिकता एक अनन्तकालिक धार्मिकता है। पवित्र शास्त्र में सब छिपी चीजें प्रभु के हैं, लेकिन जो हम पर प्रकट है हमें सच्चाई का पता करने के लिए पर्याप्त है। परमेश्वर के कानून का पालन करना महत्वपूर्ण है जो हम पर प्रकट की गई

है। दुष्ट हमेशा लूटने लड़ने के लिए और नष्ट करने के लिए आता है। **१ कुरिन्थियों २:४ – मेरा सन्देश और मेरा प्रचार ज्ञान के लुभाने वाले शब्दों में नहीं था, परन्तु आत्मा और साम ंथ्य के प्रमाण में था।**

हमारे दिल हमें मज़बूत करने के लिए विश्वास लाता है, यह बल का आत्मा है। जब दाऊद ने पांच पत्थरों के साथ गोलियत से लड़ाई लड़ी, वह परमेश्वर के पराक्रम के विश्वास में और येशु के नाम में आगे बढ़ा। इसी प्रकार, इस तरह का एक विश्वास हमें मज़बूत बनाता है शक्ति की आत्मा के साथ। कई थे जो येशु के सम्मुख आएँ थे, वह उन से पूछा ३क्या तुम विश्वास करते हो, अगर तुम विश्वास करते हो, तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें चंगा किया है?३ यह विश्वास के साथ युग्मित है शक्ति की आत्मा जिसने अंधे, अपंग, गूंगे और बहरे को चंगा किया है। हमारा परमेश्वर हमारे दिल को देखता है। और नहीं हमारे बाहर के विश्वास को।

इस प्रकार विश्वास के साथ युग्मित परमेश्वर के शक्ति की आत्मा आश्चर्यों और चमत्कार के काम करता है हमारे जीवन में। जिन लोगों को ज्ञान की कमी है इन सब बातों को समझने के लिए येशु के सम्मुख आना चाहिए और ज्ञान का अधिग्रहण पाना चाहिए। सारा के बारे में पवित्र शास्त्र क्या कहता है? **इब्रानियों ११:११** में – **विश्वास ही से सारा ने अवस्था ढल जाने पर भी गर्भ धारण की सामर्थ पाई, क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करने वाले को विश्वासयोग्य जाना।** वह परमेश्वर में विश्वास करती थी और गर्भ धारण के लिए मज़बूत बनाया गई और एक बूढ़े परिपक्व उम्र में एक बच्चे को वितरित करने के लिए सक्षम हुई। इस प्रकार यह विश्वास और शक्ति और ताकत कि आत्मा के माध्यम से सारा एक बूढ़े उम्र में गर्भावस्था का सामना करने में सक्षम होने के लिए परमेश्वर की आशीष प्राप्त की। परमेश्वर ने अपने शक्तिशाली ताकत के साथ उसे आशीष दिया। पतरस की सास बीमार थी जब येशु ने उसके घ ार को भेंट किया और उसने उसे बिस्तर पर कमज़ोर पड़ा देखा। तब येशु ने उसके लिए प्रार्थना की। **मत्ति ८:१४–१५ – और जब येशु पतरस के घर आया, तो उसकी सास को ज्वर से पीड़ित बिस्तर पर पड़े देखा। उसने उसका हाथ छुआ और उसका ज्वर उतर गया, और वह उठकर उसकी सेवा–टहल करने लगी।** आम तौर पर जिन्हें बुखार है उन लोगों को कमज़ोरी से उबरने के लिए ३–४ दिन लगते हैं। लेकिन यहाँ हम देखते हैं येशु ने उसके लिए प्रार्थना किया और वह तुरंत काम करने के लिए और खाना पकाने और येशु की सेवा के लिए मज़बूत बनाई गई। यह इस परमेश्वर के शक्तिशाली ताकत की वजह से है। जब उस स्त्री ने जिसे कई वर्षों से खून बहने की बीमारी थी येशु के बागे की छोर को छुआ, वह तुरन्त

चंगा हो गई, जबकि येशु ने महसूस किया है उसका ताकत जा रहा। उसने अपने चेलों से पूछा ‘किसी ने मुझे छुआ है, मैं महसूस करता हूँ क्योंकि शक्ति मेरे से बाहर चला गया है’। **लूका ४:१४ – तब येशु आत्मा की सामर्थ में गलील को लौटा और आस–पास के प्रदेश में उसकी चर्चा फैल गई।** परमेश्वर ने क्यों येशु को शक्ति की आत्मा दी? परमेश्वर ने येशु को अभिषेकित किया कंगालों को सुसमाचार प्रचार करने के लिए, टूटे हुए दिल को चंगा करने के लिए, बंदी को उद्धार का उपदेश देने के लिए, अंधों की दृष्टि के पुनर्प्राप्ती के लिए, चोट लगे हुओं के लिए स्वतंत्र करने के लिए। परमेश्वर कुछ भी कर सकते हैं, उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। **प्रेरितों के काम १:८ – परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे, और यरूशलेम, सारे यहूदिया और समारिया में, यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी होगे।’** जब परमेश्वर ने येशु को सामर्थ दिया, उसकी प्रसिद्धि पूरे गलील में जंगली आग की तरह फैल गई। वैसे ही हम जब शक्ति और ताकत की आत्मा के द्वारा मज़बूत किए जाते हैं, हम भी उसके नाम से शक्तिशाली चीज़ें कर सकते हैं।

हम भी उसके लिए गवाह बन सकतें हैं। **लूका २४:४९ – देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उण्डेलूंगा, परन्तु जब तक तुम स्वर्गीय सामर्थ्य से परिपूर्ण न हो जाओ, इसी नगर में ठहरे रहना।’** परमेश्वर के बिना हम अपने कार्य करने के लिए मज़बूत बनाए नहीं जा सकते। यह महत्वपूर्ण है कि हमें याद रहे कि जब हम परमेश्वर की आत्मा को प्राप्त करते हैं, उसके बाद ही हम मज़बूत बनाए जाएँगे।

एक बार लूसिफ़ेर हमारे रोस ऑफ़ शारोन कलिसिया में आया, लेकिन क्योंकि परमेश्वर की ताकतवर शक्ति के कारण, हम लूसिफ़ेर के कार्यों को हरा सके केवल हमारे शक्तिशाली परमेश्वर के अनुग्रह से, उसकी शक्ति और ताकत के माध्यम से ही हमने लूसिफ़ेर की योजनाओं को हराया। जब तक हमें परमेश्वर की आत्मा और परमेश्वर की शक्ति और ताकत उसका काम करने के लिए प्राप्त न हो, हमें समय से पहले नहीं भागना चाहिए। हमारा परमेश्वर एक अच्छा परमेश्वर है और वह ताकतवर है। लेकिन हमें उसके समय के लिए इंतजार करना है जैसे वचन कहता है : ‘परन्तु जब तक तुम स्वर्गीय सामर्थ्य से परिपूर्ण न हो जाओ, यरूशलेम नगर में ठहरे रहना।’ हमारे दिल में हमें पता होना है कि हमारे प्रभु परमेश्वर ने पूरी तरह से हमें भर दिया है, उसके बाद ही हमें आगे जाना चाहिए।

लेकिन तब तक हमें परमेश्वर की शरण और पंखों के नीचे इंतज़ार करना चाहिए। जब तक हमारे नाम की चर्चा की जा रही हो, तब तक यह समय

नहीं है आगे बढ़ने के लिए। जैसे के वचन के प्रचार करने के लिए नासिक, भिलाड़ और अन्य स्थानों के लिए जाने के मामले के रूप में, हमें परमेश्वर के समय से पहले कुछ भी नहीं करना चाहिए। यह बेकार होगा कि मैं परमेश्वर के समय से पहले इन स्थानों को जाऊँगी। इसलिए जब तक हम परमेश्वर से ताकत और शक्ति प्राप्त नहीं कर लेते, हमें परमेश्वर के कार्य करने के लिए आगे नहीं बढ़ना चाहिए। यह सभी दृष्टान्त पवित्र शास्त्र में लिखे गए हैं ताकि हम उस से सीखें और ज्ञान हासिल करें। उदा, जब हमें एक समारोह के लिए आमंत्रित किया जाता हैं, हमें आगे की पंक्ति में कभी बैठना नहीं चाहिए, जब तक हमें वहा ले न जाए, वरना मेजबान आएंगे और हमसे कहेंगे, "यह आपकी सीट नहीं है, कृपया पीछे चले जाओं"। हमारी सीटें लेने के लिए हमें आमंत्रित किया जाना चाहिए। इसी तरह, मैंने सेविकाय शुरू करना और परमेश्वर का काम करना और उसके वचन को विभिन्न स्थानों पर ले जाने के लिए, १० साल इंतज़ार किया। हमारा परमेश्वर बदलता नहीं है, लेकिन हमें राजा और याजक बना दिया है। हालांकि याद रखे कि राजाएँ और याजकें भी बदल सकते हैं। जब राजा शाऊल ने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार राज नहीं किया, तब वह परास्त किया गया और दाऊद को राजा बनाया दिया गया। **यहोशू १४:११–१२ – मुझ में आज भी उतना ही बल है जितना उस दिन था जब मूसा ने मुझे भेजा था। युद्ध करने तथा भीतर–बाहर आने–जाने के लिए जितना सामर्थ्य उस समय मुझ में था उतना आज भी है।** कालेब जो प्रभु से मज़बूत किया गया था, वृद्धवस्था होने पर भी कहा, आज भी मुझ में एक युवक की ताकत है, वह पहाड़ी क्षेत्र मेरे हाथ में दे, मैं दुश्मन को भगाऊँगा और देश में विजय लाऊँगा। यह परमेश्वर है जो हमें शक्ति, बुद्धि और ज्ञान से हमें लैस करता हैं। हमारा परमेश्वर एक अच्छा परमेश्वर है, वह कभी बदलता नहीं, वह उत्तम और पराक्रमी है और वह वही न बदलने वाला परमेश्वर है। हम सब परमेश्वर के हाथ में हैं। हमारा परमेश्वर सचमुछ पराक्रमी है; वह मुझे मेरा वचन आसानी से बनाने में मदद करता है। इसलिए मैं आत्मविश्वास से कहती हूँ कि मेरा परमेश्वर अच्छा है और वह मुझे कभी नहीं त्यागेगा। हमारा परमेश्वर एक अद्‌भुत और पराक्रमी परमेश्वर है। वह हमेशा हर किसी के जीवन में अच्छा करेगा। बुद्धिमान इसे समझते हैं, लेकिन मूर्ख नहीं समझते, एक बच्चे के रूप में या एक युवा के रूप में या यहाँ तक कि अपने बुढ़ापे में भी। दुष्ट दुष्टता करते रहे, लेकिन धर्मी न्यायपूर्वक और अधिक न्यायपूर्वक करते रहे। जो लोग हमें छूते हैं, परमेश्वर की आँख की पुतली को छूते हैं। इसलिए कालेब कहता है, यहां तक कि इस वृद्धावस्था में भी मुझ में एक युवा की ताकत है। **इब्रानियों ११:३४ – आग की ज्वाला को**

शांत किया, तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवान किए गए, युद्ध में वीरता दिखाई, विदेशी सेना को मार भगाया। परमेश्वर की शक्ति के साथ, हम भी विदेशी सेनाओं से लड़ने में सक्षम हो जाएँगे। **यशायाह ४१:१० – मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूं। इधर–उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ। मैं तुझे दृढ़ करूंगा और निश्चय ही तेरी सहायता करूंगा, और अपने धर्ममय दाहिने हाथ से तुझे सम्भाले रहूंगा।** वह परमेश्वर जिसने अपने चेलों से कहा ‘यरूशलेम में ठहरों, जब तक मैं तुम्हें मजबूत बनाऊँ और तुम लोगों के बीच जाने जाओं। वही परमेश्वर आज हमसे कहता है, ‘मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ। इधर–उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ। **यशायाह ४०:९ – हे शुभ समाचार सुनानेवाली सिय्योन, ऊंचे पर्वत पर चढ़ जा! हे शुभ समाचार सुनानेवाली यरूशलेम, अत्यन्त ऊंचे शब्द से सुना, ऊंचे शब्द से सुना, मत डर! यहूदा के नगरों से कहो, ‘तेरा परमेश्वर यहां है!’** परमेश्वर ने अपने चेलों से कहा, मज़बूत बनाने तक इंतजार करना उस के बाद तुम यरूशलेम में मेरे गवाह होंगे। जब उसने उन्हें उनके सेविकाय शुरू करने के लिए भेजा, येशु ने अपने शिष्यों से कहा, ‘मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ, पर तुम डरना नहीं’। **यिर्मयाह १६:२१ – देखो, इसी कारण मैं उन्हें बताने जा रहा हूँ – मैं इस बार अपना भुजबल और अपना पराक्रम उन पर प्रकट करूंगा; और वे जान लेंगे कि मेरा नाम यहोवा है।** प्रभु येशु अपने शिष्य के साथ था, जब उसने उन्हें अपनी ताकत और पराक्रम दिखाया। कल्पना करो, अगर प्रभु का हाथ हम पर गिरता, तो हम उठने के लिए सक्षम नहीं होते। अगर हम येशु के ‘शक्तिशाली पंखों के नीचे और उसके छाया में हमेशा रहते हैं, हम उसके द्वारा संरक्षित किए जाएँगे। कोई भी कल्पना नहीं कर सकता हैं वें सामर्थ के काम जो परमेश्वर कर सकता है और उस से भी अधिक। ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमारा परमेश्वर नहीं कर सकता। क्योंकि परमेश्वर का हाथ चेलों पर था, वे शक्तिशाली चमत्कारों को कर सके। पतरस और यूहन्ना उस लंगड़े मनुष्य को चंगा कर सके जो मंदिर के द्वार पर पड़ा हुआ था। उस लंगड़े मनुष्य को देने के लिए उनके पास सोना या चांदी नहीं था, लेकिन येशु के पराक्रमी नाम से वें उसे ठीक कर सके। परमेश्वर का पराक्रमी हाथ अद्‌भुत काम करता है। **यिर्मयाह १६:२० – क्या मनुष्य अपने लिए ईश्वरों को बना सकता है जो ईश्वर हैं ही नहीं?** क्या मनुष्य परमेश्वर बना सकता हैं? क्या इस तरह कुछ है? क्या यह संभव है कि हमारा ज्ञान परमेश्वर की ज्ञान से बढ़कर है? परमेश्वर ने इस दुनिया को बनाया और जो कुछ भी उसमें हैं। दिन और रात परमेश्वर द्वारा बनाए गए थे। ऐसा कुछ भी नहीं है जो परमेश्वर ने नहीं बनाया है। इसलिए प्रभु कहता

है, जब तुम विश्वास करोगे की मैंने कुछ बनाया है, फिर उस दिन तुम जान लोगे कि मेरा नाम प्रभु है। इस दुनिया में ऐसी कोई भी शक्तियाँ नहीं हैं जो प्रभु का नहीं हैं। **सभोपदेशक ११:५ – जैसे तू वायु का पथ नहीं जानता, और न यह कि गर्भवती स्त्री के गर्भ में हड्डियां रूप कैसे धारण करती हैं, वैसे ही तू परमेश्वर के क्रिया–कलाप नहीं जानता जो सब चीज़ों की रचना करता है।** कोई बता सकता है कैसे एक बच्चा माँ के पेट में बढ़ता है? वैसे ही इस दुनिया के आतमिक बातों का कोई भी मनुष्य को ज्ञात नहीं किया जा सकता हैं। जबकि हम आतमिक रूप मे आत्मा के द्वारा सशक्त हैं, परमेश्वर के काम का हम सब कुछ जान नहीं सकते। परमेश्वर का वचन कहता हैं कि, हर पाप क्षमा किया जा सकता है, लेकिन पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप का क्षमा कभी नहीं होगा। कोई भी परमेश्वर की महिमा ले नहीं सकता हैं; वह एक ईर्ष्यालु परमेश्वर है और किसी को उसकी महिमा कभी नहीं देगा। परमेश्वर एक भस्म करनेवाली आग है; वह अपनी महिमा के छूने वाले को नष्ट कर देगा। उदा, क्या हम जानते है हवा कहा से चल रही है? इसी तरह, कोई भी परमेश्वर की इच्छा को जानता नहीं है। दाऊद परमेश्वर द्वारा मज़बूत किया गया था, जिसने उसके जीवन में दो बातें किया था। हम पढ़े **भजन संहिता १८:३२** में – **परमेश्वर ही तो है जो सामर्थ्य से मेरी कमर कसता है और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है। भजन संहिता १८:३९ – क्योंकि तू ने युद्ध के लिए सामर्थ्य से मेरी कमर कसी है; जो मेरे विरूद्ध उठ खड़े हुए थे उनको तू ने मेरे वश में कर दिया।** क्योंकि परमेश्वर ने दाऊद के रास्ते को सिद्ध किया, उसे अपनी हर युद्ध में जीत मिली। दाऊद भालू, शेर या गोलियत को कभी नहीं डरा; जीत हमेशा उसकी थी क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। हमारे जीवन में, हमें भी लड़ाई का सामना करना पड़ेगा, हम उससे बच नहीं सकते, लेकिन जब परमेश्वर हमारे साथ है, वह हमारी हर लड़ाई लड़ेगा। **लूका १२:५ – मैं तुम्हें चेतावनी देकर कहता हूँ कि किस से डरना चाहिए: उसी से डरो जिसको मारने के पश्चात यह अधिकार है कि नरक में डाले; हां, मैं कहता हूं कि उसी से डरो!** बुराई के डर से, हमारे दीपक में तेल कम या मंद होने नहीं देना चाहिए, उसे हमेशा उज्ज्वलता से चमकने देना है। प्रेरित पौलुस **गलातियों ६:१४** में कहता है – **परन्तु ऐसा कभी न हो कि मैं किसी अन्य बात पर गर्व करूं सिवाय प्रभु येशु मसीह के क्रुस के, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है, और मैं संसार की दृष्टि में।** येशु के क्रूस पर के बलिदान के अलावा, मेरे जीवन में कुछ भी योग्य नहीं है कि मैं याद कर सकु या योग्य हो कि मैं महिमा करूँ मेरे जीवन में। पतरस, **१ पतरस १:१३** में कहता है – **अतः कार्य करने के लिए अपनी बुद्धि की कमर**

कस कर आत्मा में संयमित हो जाओ। अपनी पूरी आशा उस अनुग्रह पर रखो जो तुम्हें येशु मसीह के प्रकट होने पर दिया जाने वाला है। हमें एक सतर्क मन का होना हैं और कमज़ोर नहीं होना हैं, क्योंकि जब हम कमज़ोर होते हैं, दुष्ट हमपर वार करता है। इसलिए हमें अपनी बुद्धि कि कमर को कसना हैं और जो कुछ हम परमेश्वर के लिए करते हैं, उसमें सतर्क रहे। हमें हमेशा हमारे परमेश्वर की प्रशंसा और महिमा करनी चाहिए। याद रखे, सिय्योन के हमारे रास्ते पर, अब हम सभी जंगल में हैं। हमें बड़बड़ाना नहीं, न ही अक्सर शिकायत करना है। लूत कि पत्नी की तरह हमें पीछे मुड़कर एक नमक का स्तम्भ नहीं बनना है; या पतरस कि तरह भयभीत नहीं होना है, वरना हम नदी में डूब जाएँगे। येशु **यूहन्ना १०:२७–२८** में कहता है – **मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नाश न होंगी, और उन्हें मेरे हाथों से कोई भी छीन नहीं सकता।** कितना विशेष अधिकार है हमें परमेश्वर की भेड़ बुलाया जाना। उसने कहा कि वे, मेरी आवाज़ सुनते हैं, समझते हैं और मेरे पीछे चलते हैं । येशु आगे कहता हैं, मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगे, न ही कोई मनुष्य उन्हें मेरे हाथ से तोड़ेगा। येशु पिता, माता, बेटी, बहू और सास को अलग करने आया है। **मत्ती १०:३४–३७ – "यह न सोचो कि मैं पृथ्वी पर मेल कराने आया हूं। मैं मेल कराने नहीं, वरन् तलवार चलवाने आया हूं। मैं तो इसलिए आया कि मनुष्य को उसके पिता, पुत्री को उसकी माता, और बहू को उसकी सास के विरूद्ध कर दूं।** लोग जिनको यह बात समझने का ज्ञान नहीं है, परमेश्वर की व्यवस्था और आदेश को अस्वीकार कर दिया है। लोग पवित्र शास्त्र को नहीं जानते, वें सत्य को नहीं जानते, फिर भी मूर्खता कि बात करते है। यह येशु है जिसने स्वयँ कहा, "मैं प्रत्येक परिवार में भेड़ों से बकरी अलग करने के लिए आया हूँ। यह केवल हमारी इच्छा से नहीं, लेकिन परमेश्वर की इच्छा से है। वचन परमेश्वर के लोगों द्वारा लिखा गया था, जो आत्मा से अभिषिक्त थे। इस प्रकार हमें वचन की सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए। परमेश्वर, निश्चित रूप से बकरी और भेड़ को अलग करेगा और उन्हें ऐसा रखेगा, क्योंकि

येशु ने कहा, मेरे भेड़, मेरी आवाज़ सुनती हैं, समझते हैं और मेरे पीछे हो लेती हैं। हमें इस दुनिया और उसमें लोगों के बारे में चिंता नहीं करना चाहिए। एक ही चीज़ मायना रखता है कि क्या हमें परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य को ले जा सकता है। केवल इसपर हमारे जीवन में अच्छी पकड़ होनी चाहिए। हमें केवल परमेश्वर पर हमारा विश्वास और भरोसा रखना चाहिए।

वह हमें दूसरों से अलग करता हैं और उसकी दाख की बारी में हमें रखता हैं और इस दुनिया के बुराई से बचाने के लिए हमारे चारों ओर उसकी बाड़ ड़ालता है। इसलिए हमें नम्र और घमण्ड़ के बिना होना हैं और जो कुछ हम प्रभु के लिए करते हैं उसमें धर्मी होना हैं। यह वचन आशिष लाए उन सभी पर जो इसे पढ़ते हैं।

क्रिस्त में तुम्हारी।

पास्टर सरोजा म.